महाराष्ट्र विज्ञान वर्धिनी

आघारकर संशोधन संस्था, पुणे

भा.कृ.सं.प. अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन संशोधन योजना

सोयाबीन पीक सल्ला/सोयाबीन फसल सलाह

1 ते 15 सप्टेंबर / 1 से 15 सीतंबर

सोयाबीन पीक सदध्या शेंगा भरण्याच्या अवस्थेत आहे. त्यातच काही भागामध्ये सतत पाऊस पडत आहे. पिकाच्या या अवस्थेदरम्यान त्यावर वेगवेगळ्या किडी व रोगांचा प्रादुर्भाव होण्याची शक्यता आहे. त्यामुळे यांपासून पिकाचे संरक्षण करण्यासाठी शेतकरी बांधवांना पुढील प्रमाणे सल्ला देण्यात येत आहे.

सोयाबीन फसल इस समय फली भरने की अवस्था में है। इसके कुछ हिस्सों में लगातार बारिश हो रही है। फसल की इस अवस्था के दौरान विभिन्न कीटों और बीमारियों से प्रभावित होने की संभावना होती है। अतः इससे फसलों को बचाने के लिए किसानों को निम्नलिखित सलाह दी जा रही है।

1) जास्त पाऊस पडत असेल व शेतात सोयाबीन पीकामध्ये पाणी साठत असेल तर, उताराच्या दिशेने पाण्याचा निचरा होईल अशी व्यवस्था करावी.
यदि भारी वर्षा हो और खेत में सोयाबीन की फसल में पानी जमा हो तो पानी को ढलान की ओर निकालने की व्यवस्था करनी चाहिए।

2) रायझोबॅक्टेरिया एरियल ब्लाइट रोगाची लक्षणे दिसू लागल्यावर याच्या नियंत्रणासाठी शिफारस केलेले बुरशीनाशके जसे पायरोक्लोस्ट्रोबिन 20% डब्ल्यूजी (375-500 ग्रॅम/हे) किंवा फ्लुक्सापायरोक्साईड 167 ग्रॅम/लि + पायरोक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्रॅम/ली एससी (300 मिली/हे) किंवा पायरोक्लोस्ट्रोबीन + इपोक्कोसीकोनाजोल 50 ग्रा/ली एसई (750 मिली/हे) या बुरशीनाशकांची फवारणी करावी.

रायजोक्टोरिया एरिअल ब्लाइट रोग के लक्षण दिखाई देने पर सलाह हैं कि नियंत्रण हेतु अनुशंसित फफूंदनाशक पायरोक्लोस्ट्रोबीन 20% डब्लूजी(375-500 ग्रा/हे) या फ्लुक्सापय्रोक्साईड 167 ग्रा/ली + पायरोक्लोस्ट्रोबीन 333 ग्रा/ली एससी (300 मिली/हे) या पायरोक्लोस्ट्रोबीन + इपोक्कोसीकोनाजोल 50 ग्रा/ली एसई (750 मिली/हे) जैसे फफूंदनाशकों का अपने फसल पर छिडकाव करें।

3) सतत पाऊस पडणाऱ्या भागात अंन्थ्राक्नोज रोगाची शक्यता जास्त असते. त्यामुळे त्याची सुरुवातीची लक्षणे दिसल्यानंतर शेतकऱ्यांनी त्यावर नियंत्रण ठेवण्यासाठी लवकरात लवकर टेब्युकोनाझोल 25.9 ईसी (625 मिली /हे।) किंवा टेब्युकोनाझोल 38.39 एस.सी. (625 मिली/हे) किंवा टेब्युकोनाझोल 10% + सल्फर 65%WG (1.25 kg/ha) किंवा कार्बेनाझम 12% + मॅंकोझेब 63% WP. (1.25 किलो/हे) पिकावर फवारावे.

अंन्थ्राक्नोज रोग की संभावना लगातार वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिक होती है। इसलिए इसके शुरुआती लक्षणों के बाद किसानों को इसे नियंत्रित करने के लिए टेबुकोनाजोल 25.9 ईसी (625 मिली/हे) का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। या टेबुकोनाजोल 38.39 एस.सी. (625 मिली/हे) या टेबुकोनाज़ोल 10% + सल्फर 65%WG (1.25 किग्रा/हे) या कार्बेनाज़म 12% + मैन्कोज़ेब 63% WP (1.25 कि.ग्रा./हे.) का फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

4) पिवळा मोझॅक/सोयाबीन मोझॅक रोगाची लक्षणे दिसताच रोगग्रस्त झाडे शेतातुन उपटून नष्ट करावीत. अशी उपटलेली झाडे शेतात इतरत्र हातात घेऊन फिरू नये. हाँ रोग पसरवणाऱ्या पांढऱ्या माशीच्या नियंत्रणासाठी. प्रतिबंधात्मक उपाय म्हणून एसिटामिप्रीड 25% + बायफेन्थ्रिन 25% डब्ल्यूजी (250 ग्रॅम/हे) ची फवारणी करावी. किंवा त्याऐवजी पूर्व-मिश्रित कीटकनाशक थायोमेथोक्झाम + लॅम्बडा सायहॅलोथ्रिन (125 मिली/हे) किंवा बीटासिफ्लुथ्रिन+इमिडाक्लोप्रिड (350 मिली/हे) देखील फवारता येऊ शकते. पांढऱ्या माशीच्या नियंत्रणासाठी शेतकऱ्यांनी त्यांच्या शेतात ठिकठिकाणी पिवळ्या रंगाचे चिकट सापळे लावावेत.

पीला मोज़ेक/सोयाबीन मोज़ेक रोग के लक्षण दिखाई देने पर रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। ऐसे उखाड़े हुए पेड़ों को खेत में अन्यत्र हाथ में लेकर नहीं ले जाना चाहिए। रोग फैलाने वाली सफ़ेद मक्खी के नियंत्रण के लिए एसिटामिप्रिड 25% + बाइफेन्थ्रिन 25% डब्लूजी (250 ग्राम/हेक्टेयर) का छिड़काव किया जाना चाहिए। या तो पूर्व-मिश्रित कीटनाशक थायोमेथोक्साम + लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन (125 मिली/हेक्टेयर) या बीटासायफ्लुथ्रिन+ इमिडाक्लोप्रिड (350 मिली/हे) का भी छिड़काव किया जा सकता है। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए किसानों को अपने खेतों में पीला चिपचिपा ट्रेप लगाना चाहिए।

5) ऊंट आळीच्या नियंत्रणासाठी खालीलपैकी कोणत्याही एका रसायनाची फवारणी करावी- क्लोरएंट्रानिलिप्रोल 18.5 एससी, (150 मिली/हे) किंवा ईमॅमेक्टिन बेंझोएट 01.90 ईसी (425 मिली/हे), किंवा ब्रोफ्लानिलाइड 300 g/l एससी (42-62 ग्रॅम/हे), किंवा फ्लुबेन्डियामाइड 20 डब्लूजी (250-300 ग्रॅम/हे) किंवा फ्लुबेन्डियामाइड 39.35 एससी (150 मिली) किंवा एसिटामिप्रिड 25% + बायफेन्थ्रीन 25% डब्ल्यूजी (250 ग्रॅम/हे) किंवा इंडोक्साकार्ब 15.80 ईसी (333 मिली/हे), किंवा लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रिन 04.90 % सीएस (300 मिली/हे) किंवा प्रोफेनोफोस 50% ईसी (1 ली/हे) किंवा टेट्रानिलीप्रोल 18.18 एससी (250-300 मिली/हे) किंवा पूर्व-मिश्रित बीटा-सायफ्लुथ्रीन 08.49 % + इमिडाक्लोप्रिड 19.81% डब्लू/डब्लू ओडी (350 मिली/हे) किंवा नोव्हॅलुरॉन+इंडोक्साकार्ब 04.50% एससी (825-875 मिली/हे) किंवा पूर्व मिश्रित थायामेथोक्सम + लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रीन (125 मिली/हे) किंवा क्लोराँट्रानिलिप्रोल 09.30 % + लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रीन 04.60 % जेडसी (200 मिली/हे) ची फवारणी करावी.

सेमीलूपर कैटरपिलर को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक रसायन का छिड़काव करें- क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5 एससी, (150 मिली/हे) या इमामेक्टिन बेंजोएट 01.90 ईसी (425 मिली/हे), या ब्रोफ्लानिलाइड 300 ग्रा/ली एससी (42-62 ग्राम/हे), या फ्लुबेंडियामाइड 20 डब्ल्यूजी (250-300 ग्राम/हे) या फ्लुबेंडियामाइड 39.35 एससी (150 मिली) या एसिटामिप्रिड 25% + बाइफेन्थ्रिन 25% डब्लूजी (250 ग्रा/हे) या इंडोक्साकार्ब 15.80% ईसी (333 मिली/हे), या लैम्ब्डा-साइहेलोथ्रिन 04.90 % सीएस (300 मिली/हे) या प्रोफेनोफोस 50% ईसी (1 ली/हे) या टेट्रानिप्रोल 18.18 एससी (250-300 मिली/हे) या पूर्व-मिश्रित बीटा-साइफ्लुथ्रिन 08.49% + इमिडाक्लोप्रिड 19.81% डब्ल्यू/डब्ल्यू ओडी (350 मिली/हे) या नोवेल्यूरॉन + इंडोक्साकार्ब 04.50% एससी (825-875 मिली/हे) या पूर्व मिश्रित थायामेथोक्सम + लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रीन (125 मिली/हे) किंवा क्लोराँट्रानिलिप्रोल 09.30 % + लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रीन 04.60 % जेडसी (200 मिली/हे) का छिडकाव करें।

6) तंबाखूवरील पाने खाणाऱ्या आळीच्या (स्पोडोप्टेरा लिटुरा) नियंत्रणासाठी, शेतकऱ्यांना पुढील प्रमाणे कोणतेही एक कीटक नाशक फवारणी करण्याचा सल्ला दिला जातो.इमामेक्टिन बेंझोएट 01.90% ईसी (425 मिली/हे) किंवा ब्रोफ्लानिलाइड 300 ग्रॅम/लिटर एससी (42-62 ग्रॅम/हे) किंवा ॲसिटामिप्रिड 25% + बायफेन्थ्रीन 25% डब्ल्यूजी (250 ग्रॅम/हे) किंवा फ्लुबेन्डियामाइड 20% डब्ल्यूजी (250-300 ग्रॅम/हे) किंवा फ्लुबेंडियामाइड 39.35% डब्ल्यू/डब्ल्यू एससी (150 मिली/हे) किंवा इंडोक्साकार्ब 15.80% ईसी (333 मिली/हे), किंवा टेट्रानिलीप्रोल 18.18 एससी (250-300 मिली/हे) किंवा स्पिनोटेरम 11.7 एससी (450 मिली/हे) किंवा नोव्हॅल्युरॉन+इंडोक्साकार्ब 04.50 % एससी (825 - 875 मिली/हे).

तम्बाकू इल्ली (स्पोडोप्टेरा लिटुरा) के नियंत्रण के लिए किसानों को निम्नलिखित में से कोई भी कीटनाशक छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।इमामेक्टिन बेंजोएट 01.90% ईसी (425 मिली/हे) या ब्रोफ्लानिलाइड 300 ग्राम/लीटर एससी (42-62 ग्राम/हे) या एसिटामिप्रिड 25% + बिफेन्थ्रिन 25% डब्लूजी (250 ग्राम/हे) या फ्लुबेंडियामाइड 20 % डब्ल्यूजी (250-300 ग्राम/हे) या फ्लुबेंडियामाइड 39.35% डब्ल्यू/डब्ल्यू एससी (150 मिली/हे) या इंडोक्साकार्ब 15.80% ईसी (333 मिली/हे), या टेट्रानिप्रोल 18.18 एससी (250-300 मिली/हे) या स्पिनोटरम 11.7 एससी (450 मिली/हे) या नोवालुरॉन+इंडोक्साकार्ब 04.50% एससी (825-875 मिली/हे)।

7) आपल्या शेतात जर ऊंट आळी + शेंगा खणारी आळी + तंबाखूचे पाने खणारी आळी (स्पोडोप्टेरा लिटुरा) यांचा एकाच वेळी प्रादुर्भाव आढळून आला तर त्यांच्या नियंत्रणासाठी शेतकऱ्यांना खालीलपैकी कोणत्याही कीटकनाशकाची फवारणी करण्याचा सल्ला दिला जातो: ब्रोफ्लानिलाइड 300 ग्रॅम/लिटर एससी (42-62 ग्रॅम/हे किंवा फ्लुबेंडियामाइड 39.35 % w/w SC (150 मिली/हे) किंवा इंडोक्साकार्ब 15.80% ईसी (333 मिली/हे), किंवा नोव्हॅल्युरॉन+इंडोक्साकार्ब 04.50% एससी (825-875 मिली/हे).

आपकी फसल में सेमीलूपर + फली खाणेवाली इल्ली + तंबाकू की पत्ते खानेवाली इल्ली (स्पोडोप्टेरा लिटुरा) एक साथ पाए जाते हैं, तो किसानों को नियंत्रण के लिए निम्नलिखित कीटनाशकों में से किसी एक का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है: ब्रोफ़्लानिलाइड 300 ग्राम/लीटर एससी (42-62 ग्राम/हे) या फ्लुबेंडियामाइड 39.35 % w/w एससी (150) एमएल/हे) या इंडोक्साकार्ब 15.80% ईसी (333 एमएल/हे), या नोवेल्यूरॉन+इंडॉक्साकार्ब 04.50% एससी (825-875 मिली/हे)।

8) जर पाने खाणाऱ्या अळ्यांचा (हिरवा सेमिल्युअर, हेलिओथिस आणि तंबाखू सुरवंट) प्रादुर्भाव + शोषक कीटक (पांढरी माशी/ॲफिड/जॅसिड्स) + शेंगा पोखरणाऱ्या किडी (चक्री भुंगा/खोड माशी) यांच्या एकत्रीत नियंत्रणासाठी पुढीलप्रमाणे पूर्व मिश्रित कीटकनाशक फवारण्याचा सल्ला देण्यात येतो. थायामेथोक्सम 12.60%+ लॅम्बडा सायहॅलोथ्रिन 09.50% झेडसी किंवा बीटासिफ्लुथ्रिन + इमिडाक्लोप्रिड किंवा ॲसिटामिप्रिड 25% + बायफेन्थ्रीन 25% डब्ल्यूजी किंवा क्लोराँट्रानिलिप्रोल 09.30% + लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रीन 09.50% झेडसी.

यदी पत्ती खाने वाली इल्लीयों (सेमीलूपर/तम्बाकू/चने की इल्ली) तथा रस चूसने वाले कीट जैसे सफ़ेद मक्खी/जसीड एवं तना छेदक कीट (तना मक्खी/चक्र भृंग) के एक साथ नियंत्रण हेतु पूर्व मिश्रित कीटनाशक जैसे थायामेथोक्सम 12.60%+ लॅम्बडा सायहॅलोथ्रिन 09.50% झेडसी या बीटासिफ्लुथ्रिन + इमिडाक्लोप्रिड या ॲसिटामिप्रिड 25% + बायफेन्थ्रीन 25% डब्ल्यूजी या क्लोराँट्रानिलिप्रोल 09.30% + लॅम्बडा-सायहॅलोथ्रीन 09.50% झेडसी. का छिड़काव करें।

9) कमी कलावधीत पक्व होणाऱ्या वाणांच्या कोवळ्या शेंगा उंदराने खाल्ल्यामुळे होणारे नुकसान टाळण्यासाठी फ्लोकोउमाफेन 0.005% हेक्टरी 15-20 वड्या उंदरांच्या छिद्रांजवळ ठेवावेत.

जल्दी पकने वाली किस्मों की नाजुक फलियों को चुहो से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए फ्लुकोमाफेन 0.005% 15-20 बडी/हेक्टेयर चुहे के घर के पास लगाया जाना चाहिए।